ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 283-284
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

स्त्री मन : विविध प्रश्नों का निवास स्थान

पल्लवी देवी

शोध अध्येत्री–(एम.फिल्.) हिन्दी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू (जम्मू एण्ड कशमीर) भारत

Received-13.09.2022, Revised-18.09.2022, Accepted-24.09.2022 E-mail: pallvibhagat090@gmail.com

सारांश:– *वर्तमान में बहुत से साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से हिन्दी साहित्य की समृद्धि हेतु और समाज के वास्तविक रूप को चित्रित करने के साथ–साथ उसका उचित मार्ग–दर्शन करने हेतु अपना अविस्मरणीय योगदान देने में संलग्न हैं। ऐसे साहित्यकारों में विभा रानी का नाम भी काफी प्रसिद्ध है। वह एक सशक्त एवं सुप्रसिद्ध नाट्य लेखिका हैं। वह नाट्य विधा को सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावशाली माध्यम मानती है क्योंकि समस्त साहित्यिक विधाओं में नाटक ही एक ऐसी विधा है, जिसका समाज के साथ सीधा और घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। नाटक एक ऐसी कला है जिसके द्वारा व्यक्ति के भावों और विचारों को रंगमंच पर प्रभापूर्ण रंगमंचीय उपकरणों तथा भंगिमाओं सहित दर्शाया जाता है।*

कुंजीभूत शब्द– साहित्यकार, हिन्दी साहित्य, वास्तविक रूप, चित्रित, उचित मार्ग, दर्शन, अविस्मरणीय योगदान, रंगमंच।

इन्होंने 'आओ तनिक प्रेम करें' और 'अगले जनम मोहे बिटिया न कीजो' दोनों नाटकों में स्त्री–मन को विविध प्रश्नों के निवास स्थान स्वरूप चित्रित किया है। 'मन' को शरीर के ऐसे हिस्से तथा प्रक्रिया के रूप में स्वीकारा जाता है जिससे मनुष्य किसी विषय को समझने और उस पर चिंतन कर पाने में सक्षम होता है। मनुष्य मन में समय के साथ–साथ विभिन्न इच्छाएं, लालसाएं, वासनाएं, स्वप्न, उत्तर तथा प्रश्न जन्म लेते हैं, जिनकी स्पष्ट रूप से गणना नहीं की जा सकती है। इसी प्रकार यदि स्त्री–मन में झाँक कर देखा जाए तो वहाँ अनेक ऐसे प्रश्न मिलेंगे जो उत्तर पाने के लिए व्याकुल हैं। स्त्री कभी समाज, परिवार, अपनों, बेगानों तो कभी स्वयं से ही प्रश्न करने लगती है परन्तु उसे अधिकांश प्रश्नों के उत्तर नहीं मिल पाते और वे 'प्रश्न' मात्र प्रश्न ही बनकर रह जाते हैं जो जीवन के अंतिम क्षण तक उसकी आत्मा को कचोटते रहते हैं।

'आओ तनिक प्रेम करें' नाटक में ऐसे ही प्रश्नों की कचोट को सहन करता स्त्री–हृदय दृष्टिगोचर होता है। सपन अपनी आधी जिंदगी जी चुकी है किन्तु वह जीवन उसने अपनी इच्छानुसार व्यतीत नहीं किया है। अपनी ही जिंदगी अपनी मर्जी से जीने का अधिकार उसे नहीं है, इस संदर्भ में वह पति से प्रश्न करती है, " ... आखिरकार यह देह मेरी है, आत्मा मेरी है, इच्छाएँ और कामनाएँ मेरी हैं, तो क्या इन सबके साथ रहने का, जीने का मेरा अपना कोई अधिकार नहीं।"[1] इसी तरह वह उससे यह भी पूछती है कि स्त्री को प्रत्येक रूप में पुरुष के प्रेम–प्रसंग सुनने और अपने छुपाए रखने के लिए आखिर क्यों विवश होना पड़ता है –

"... कोई लड़की अगर किसी से प्रेम करे तो उसे क्यों जीवन–भर सबसे छुपाकर रखना होता है? ... उसके प्रेम की कथा सुनने की ताब क्यों किसी में नहीं होती? न बाप, न भाई, न पति, न बेटा? ... लेकिन औरत माँ, बहन, बीवी, बेटी बनकर सबकी प्रेम–कहानियां सुनती रहे।"[2] पति द्वारा अपने प्रश्नों का कोई भी उत्तर न पाकर वह और भी ज्यादा असमंजस में पड़ जाती है। जब उसे समझ नहीं आता कि वह इन प्रश्नो के उत्तर किससे माँगे, तब वह खुद से ही प्रश्न करने लगती है – " ... प्रेम, पुरुष, प्रेमी ... हम लोगों को अपने जीवन का यह सबसे अहम हिस्सा सभी से दबाकर, छुपाकर क्यों रखना होता है? किसी पुरुष में क्यों यह ताकत नहीं कि वह अपने जीवन के दूसरे हिस्से का राग सुने, उसका रंग देखे, उसके रस को छुए?"[3] वह चाहती तो है कि जिस प्रकार पुरुष अपने प्रेम सम्बन्धों को सहजता से सबके समक्ष प्रदर्शित करता है, उसी प्रकार वह स्त्री–जीवन के सत्य को भी जानने की हिम्मत रखे परन्तु वह जानती है कि प्रत्येक पुरुष में इतनी सहनशीलता नहीं है कि वह स्त्री की प्रेम–कहानी सुन सके इसलिए जब वह यही असमर्थता अपने पति में भी देखती है तो उसका मन विद्रोह कर उठता है, "एकबारगी मन विद्रोह भी कर उठा कि जब ये सुना सकते हैं अपनी प्रेम–कहानी, वह भी एक नहीं, तीन–तीन तो मैं क्यों नहीं?"4 वह अपने भीतर के विद्रोह को प्रत्यक्ष रूप देने की शक्ति तो रखती है किन्तु वह स्वयं भी सत्य को उदघाटित कर पाने में सक्षम नहीं हो पाती है क्योंकि वर्तमान में अतीत के पन्नों को पुनः पढ़ना, उसे याद करना उसके लिए आसान नहीं होता। उससे भी ज्यादा वह अपने घर–परिवार की खुशी और रिश्ते नातों को देखकर चुप रह जाती है कि कहीं उन रिश्तों में कड़वाहट न आ जाए।

'अगले जनम मोहे बिटिया न कीजो' नाटक के नारी पात्रों के मन में भी अनेक प्रश्न उत्पन्न होते दिखाई पड़ते हैं। विभा ने इस नाटक में मिथिला की एक लोककथा का वर्णन किया है, जिसमें एक भाई का अपनी बहन को पत्नी बनाने का संकल्प और माता–पिता का उस संकल्प को पूर्ण करने का निश्चय एक बेटी के मन को चकनाचूर कर देता है कि आखिर क्यों उसके साथ ऐसा अन्याय किया जा रहा है। विवेच्य कृति में चंपाकली को जब ज्ञात होता है कि उसके भाई के साथ विवाह

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

करने के अनैतिक संकल्प को पूर्ण करवाने में उसके माँ–पिताजी भी सहयोगी बन रहे हैं तो उसके मन में प्रश्न उठाता है कि क्या एक बेटी का उसके माँ–बाप के जीवन में कोई महत्व नहीं है –

"माँ–पिताजी? वे कैसे मान गए? क्या बेटी का अस्तित्व इस संसार में कुछ भी नहीं? ... वह बेटा है, इसलिए यह पूरी की पूरी दुनिया, इसके नियम–कानून ... सब उसके हो गए? हमारे लिए कुछ भी नहीं?"[5]

एक पुत्री के लिए उसकी माता ईश्वर का दूसरा रूप होती है। वह जितना विश्वास ईश्वर पर करती है उतना ही विश्वास माँ पर भी करती है। माँ की छत्र–छाया में वह स्वयं के साथ कुछ भी अनुचित होने के बारे में सोच तक नहीं पाती किन्तु जब एक स्त्री ही पुत्री की अपेक्षा पुत्र के प्रति अधिक प्रेम–भाव रखने लगती है और पति के भय से पुत्र के अनुचित कर्म में उसका साथ देने हेतु तैयार हो जाती है तब बेटी के समक्ष उसका ईश्वरीय स्वरूप झूठा पड़ जाता है। ऐसा ही विश्वास चंपाकली को अपनी माँ पर होता है परन्तु जब सत्य उसके सामने आता है तब वह असहाय होकर उससे पूछने लगती है – "माँ ... तुम भी पुत्र–मोह में इतना जकड़ गई? और सुहाग के भय से काँपकर इस अधर्म के लिए तैयार हो गई?"[6] यह लोककथा बहुत ही आश्चर्यजनक है जिसे सामान्य जन या भारतीय सभ्यता सरलता से स्वीकार नहीं कर सकती है।

परिवार और अपने मित्रों के साथ खेले गए नाटक में अंकिता राजकुमारी चंपाकली की भूमिका निभाती है। चंपाकली पर अपनों द्वारा हुआ अत्याचार उसे सोचने पर विवश कर देता है कि क्या औरत सिर्फ भोग–सामग्री है, उसके अलावा क्या उसका कोई महत्व नहीं है। वह सामाजिक सम्बन्धों पर प्रश्न चिन्ह लगाती हुई अपनी माँ से कहती है, "ममा ... नाते–रिश्ते क्या इतने हलके हो गए हैं? हम क्या केवल इस्तेमाल के लिए हैं? Just use and throw ही हमारी नियति है क्या?"[7]

स्त्री चाहे आधुनिक समय की हो या फिर प्राचीन समय की, अधिकांश पुरुष उसे यौन–सुख प्राप्ति का साधन ही मानते आ रहे हैं। आधुनिक युग में पूर्व समाज प्राचीन मान्यताओं से जकड़ा हुआ था इसलिए स्त्री के साथ अन्याय होता था तो यह धारणा पूर्ण सत्य नहीं हो सकती क्योंकि आज जब समाज में पुरानी रूढ़ियों का खण्डन हो रहा है, आधुनिक सोच लोगों में पनप रही है, तब भी उसकी स्थिति में कोई विशेष अंतर देखने को नहीं मिल पा रहा है। वह आज भी कहीं न कहीं किसी रूप में प्रताड़ित की जा रही है। चंपाकली और अंकिता दोनों को केन्द्र में रखते हुए इशिता नाटक के अन्त में यही प्रश्न उठाती हुई नजर आती है –

"उस जमाने में भी यह सब होता था, आज भी हो रहा है, तो हम बदलें कहाँ?"[8] इस तरह देखें तो ज्ञात होता है कि प्रत्येक स्त्री–हृदय अनगिनत प्रश्नों का निवास–स्थान है। वह इन तमाम प्रश्नों का उत्तर पाकर उनसे मुक्त होना चाहती है किन्तु उसे कोई भी स्पष्ट उत्तर नहीं मिल पा रहा है और वह इन्हीं प्रश्नों के साथ जीने के लिए विवश है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. विभा रानी, आओ तनिक प्रेम करें, पृ. 49
2. वही, पृ. 50
3. वही, पृ. 50
4. वही, पृ. 50
5. विभा रानी, अगले जनम मोहे बिटिया न कीजो, पृ. 50
6. वही, पृ. 50
7. वही पृ. 40–41
8. वह , पृ. 85

*****